SHRI ARJUN ARORA: May I know if any other State has made a similar decision?

DR. K. L. SHRIMALI: Yes, Sir. That is what I said. I am prepared to place a statement on the Table of the House which will indicate that most of the States are now implementing the three-language formula.

MR. CHAIRMAN: That" is what the hon. Minister said in reply to the first question.

श्री भगवत नारायण भार्गव : नेशनल इंटिग्रेशन कमेटी के सम्बन्ध में जो चीफ़ मिनिस्टर्स की कांफ्रेंस हुई थी उसमें यह तय हुआ था कि भारत की सब प्रादेशिक भाषाएं नागरी लिपि के द्वारा पढ़ाई जायं । इसको ध्यान में रखते हुए क्या गवर्नमेंट का राज्य सरकारों को यह सिफारिश करने का विचार है कि सब प्रादेशिक भाषाओं के लिए नागरी लिपि का उपयोग किया जाय ?

डा० कालू लाल श्रीमाली : न यह अभी संभव है कि सभी भाषाएं नागरी लिपि के द्वारा सिखाई जायं और न इसकी अभी कोई तात्कालिक आवश्यकता है ।

अफ़ीम का खरीदा जाना और बेचा जाना

*७८. **श्री विमलकुमार मन्नालालजी चोरड़िया** : क्या **वित्त** मंत्री १९ जून, १९६२ को राज्य सभा में अतारांकित प्रश्न संख्या १२५ के दिये गये उत्तर को देखेंगे और यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) १९६१ के वर्ष में कितनी अफ़ीम खरीदी गई और कितनी बेची गई और इसे क्रमश: किन दरों पर खरीदा और बेचा गया; और

(ख) इस सौदे में क्या लाभ अथवा हानि हुई ?

ffPURCHASE AND SALE OF OPIUM

*78. SHRI V. M CHORDIA: Will the Minister of FINANCE be pleased t'o refer to the answer given to Un-starred Question No. 125 in the Rajya Sabha on the 19th June, 1962 and state:

(a) the quantity of opium purchased and sold in the year 1961 and the rates at which it was purchased and sold respectively; and

(b) what was the financial outcome of the transaction?]

वित्त मंत्रालय में उपमंत्री (श्री बी० आर० भगत) : (क) १९६१ में ९० डिगरी घनत्व वाली ६९९ टन कच्ची अफ़ीम खेतिहरों से खरीदी गई और ६५३ टन दूसरे देशों के हाथ बेची गई। खेतिहर द्वारा दी गई औसत उपज के आधार पर, ७० डिगरी घनत्व वाली कच्ची अफीम ३३ रुपये ५० नये पैसे से लेकर ४२ रुपये प्रति सेर तक की अलग अलग दरों पर खरीदी गई। यह अफीम विदेशी ग्राहकों के हाथ, लगभग ९० डिगरी घनत्व वाली तैयार बट्टियों के रूप में प्रति किलो प्रति एकक मार्फीन १.५५ डालर या ७.३६ रुपये के बुनियादी निर्यात मूल्य पर बेची गयी, जिसमें कलकत्ते में जहाज पर चढ़ाने तक का खर्च शामिल है ।

(ख) विदेशों को भेजी गयी अफीम की बिक्री से १९६०-६१ के वित्तीय वर्ष में ४.५४ करोड़ रुपया प्राप्त हुआ ।

ffTHE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF FINANCE (SHRI B. R. BHAGAT): (a) 699 tons of raw opium at 90° consistence were purchased from cultivators and 653 tons were Sold to foreign countries during the year 1961. The Raw opium was purchased at different rates varying from Rs. 33-50 to Rs. 42 per seer at 70° consistence, depending on the average

tt] English translation.

yield tendered by the cultivator. It was sold to foreign customers in the form of finished opium cakes (about 90° consistence), at the basic export price of $ 1.55 or Rs. 7.36 per unit of morphine per kilo f.o.b. Calcutta.

(b) A sum of Rs. 4.54 crores was received as sale price during the financial j ear 1960-61 in respect of opium exported to foreign countries.]

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमन्, यह बतलाने की कृपा करेंगे कि बढ़ते हुए भावों को देखते हुए और शासन को जो लाभ हो रहा है उसको देखते हुए, काश्तकारों को दिये जाने वाले मूल्य में वृद्धि करने का शासन का विचार है ?

श्री बी० आर० भगत : ओपियम का जो निर्यात मूल्य है वह बढ़ नहीं रहा है। एक समस्या यह उठ खड़ी हुई है कि बाहर कम्पेटिशन बढ़ गया है और बाहर जिस भाव पर हम अफीम बेचते हैं उसमें हमको रिबेट देना पड़ रहा है। इस लिए माननीय सदस्य का यह कहना कि भावों में वृद्धि हुई है इस लिए काश्तकारों को जो मूल्य दिया जाय वह बढ़ाया जाय, वह मौलिक रूप में ठीक नहीं है। मगर जैसा अभी हमने स्लैब रेट रखा है, उसमें यह कोशिश करते हैं कि जो काश्तकार सरकार के साथ सहयोग करते हैं और जो ईमानदारी से अफीम की पैदावार बढ़ाते हैं और उसको सरकार को देते हैं, उनको हम अधिक मूल्य देते हैं।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : श्रीमन्, दिनांक १९ जून को जो उत्तर दिया गया, उसमें यह बताया गया है :

> "यहां यह बताना प्रासंगिक होगा कि खेतिहारों को दी जाने वाली कीमत में १९५५ से १९६२ के बीच क्रमशः ३३ रुपये प्रति सेर से लेकर प्रति सेर ४१ रुपये तक जाने वाले खंडों तक अर्थात् २४ प्रतिशत तक की औसत वृद्धि की गयी है. . . ."

यहां पर ३३ से ४१ रुपये का भाव आप बतलाते हैं और अभी आपने बताया है साढ़े ३३ रुपये से लेकर ४२ रुपये प्रति सेर, तो यह एक रुपये का फर्क़ अभी थोड़े दिनों में कैसे पड़ गया ?

श्री बी० आर० भगत : माननीय सदस्य अगर चाहें तो कीमतों की पूरी फेहरिस्त मैं उनको दे दूंगा। १९६०-६१ में कीमतों का स्लैब था ५ सेर पर साढ़े ३३ रुपये, और ९ सेर अफीम देने वाले किसानों के लिए ४२ रुपये। अब हमने उसमें परिवर्तन कर दिया है। ५ सेर देने वालों के लिए ३३ रुपये तो ठीक हैं। मगर बीच में जो ५ सेर से लेकर ९१/₂ सेर तक अफीम देते हैं उनकी कीमतों को हमने ३६ रुपये, ३८ रुपये और ४१ रुपये रखा है। चूंकि हमने पहले स्लैब में काफी वृद्धि की है, इसलिए आखिर में हमें उस कीमत को ४२ से घटा कर ४१ रुपये करना पड़ा और ९ सेर अफीम देने वाले काश्तकारों की संख्या बहुत कम है।

SHRI B. K. GAIKWAD: May I know, Sir, the average income per acre to the agriculturist who produces opium?

SHRI B. R. BHAGAT: I want nbtice. I must say that because there is a greater and greater demand for licensing of opium from all over the country, I presume that the income is quite profitable.

MR. CHAIRMAN: Next question.

♦79 and *80. *[Postponed to the* 27tfc *August,* 1962.]